शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

जनपद हापुड़ की मलिन बस्तियों के निवासियों में मादक पदार्थों के सेवन की बढ़ती प्रवृत्ति के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

प्राप्तिः 13.03.2024
स्वीकृतः 24.03.2024

12

प्रो० अर्चना गुप्ता
अर्थशास्त्र विभाग
एस०एस०वी० कॉलिज हापुड़

अनुज कुमार
पी०एच०डी० रिसर्च स्कॉलर
ईमेलः *kumaranuj543210@gmail.com*

"आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए, मानवता एक समुद्र है। अगर समुद्र की कुछ बूँदें गन्दी है तो समुद्र गन्दा नहीं बन जाता" — ***महात्मा गांधी***

सारांश

मलिन बस्तियां किसी भी क्षेत्र, राज्य व देश के विकास में हमेशा से ही समस्या का विषय रही है जहां जीवनयापन न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतू संघर्षों से भरा हुआ है। साधारणतः कोई भी देश या शहर जो विकसित या विकासशील के पथ पर अग्रसर है तो वहां मलिन बस्ती के आकार में भी वृद्वि होने लगती है क्योकि मलिन बस्तियां, औधोगिकीकरण व नगरीयकरण का दुष्परिणाम है। विद्वानों ने मलिन बस्तियों को पत्थर का रेगिस्तान, नगरों का कैंसर तथा नर्क कहकर संबोधित किया है।

उत्तरप्रदेश के 75 जिलों में हापुड़ सबसे कम क्षैत्रफल (660 वर्ग कि०मी०) वाला जिला है। जो उत्तरप्रदेश के कुल क्षेत्रफल (2,40,928 वर्ग कि०मी०) का केवल 0.27% है। किंतु मलिन बस्तियों जैसी गंम्भीर समस्या से यह भी अछूता नही रहा है।

जनपद हापुड़ की चार नगर पालिका (नगर पालिका परिषद पिलखुवा, नगर पालिका परिषद हापुड़, नगर पालिका परिषद गढ़ मुक्तेश्वर, नगर पंचायत बाबूगढ़) से प्राप्त आंकड़ें चिंतित करने वाले है जहां 31 मलिन बस्ती है जिनमें 92664 आबादी निवास करती है।

इस लघु शोध द्वारा हमने जनपद हापुड़ की मलिन बस्तियों में मादक पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्तियों में विभिन्न प्रकार के मादक पदार्थों का प्रयोग तथा उनके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया है। जिसके लिए मुख्यतः प्राथमिक संमंकों का प्रयोग किया गया है। मलिन बस्ती का चयन लॉटरी विधि द्वारा तथा डाटा संकलन अनुसूचियों के आधार पर साक्षात्कार द्वारा किया गया है।

मुख्य बिन्दु

मलिन बस्ती, जनगणना, आबादी, आवास, मादक पदार्थ

शोध के उददेश्य

- इस लघु शोध का उददेश्य मलिन बस्ती में विभिन्न प्रकार के मादक पदार्थों की उपभोग प्रवृत्ति का अवलोकन करना है।
- हापुड़ मलिन बस्ती में निवासित व्यक्तियों पर मादक पदार्थों का सेवन करने से व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का अनुमान लगाना है।
- जनपद हापुड़ में कुल मलिन बस्तियों की संख्या ज्ञात करना है।
- हापुड़ मलिन बस्तियों में निवासित कुल जनसंख्या के आकड़ों को प्राप्त करना है।
- मलिन बस्तियों के उत्थान हेतु सरकारी कानूनों के नियमन एवं योजनाओं के लाभ वितरण का अनुमान लगाना हैं।

शोध पद्वति

यह लघु शोध मुख्यतः प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। यह उत्तर प्रदेश के सबसे छोटे जनपद हापुड़ की मलिन बस्तियों में मादक पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्तियों के साक्षात्कार द्वारा संकलित है। अध्ययन की पारदर्शिता को ध्यान में रखते हुए हापुड़ की 5 मलिन बस्तियों (सोटावाली, सोहनपुरा–लोदीपुर, अम्बेडकर नगर, भीमनगर, तथा कविनगर) में से (प्रत्येक मलिन बस्तियों में से 20 व्यक्ति) 100 व्यक्तियों का शोध हेतु चुनाव किया गया है। साथ ही द्वितीयक आकडों का सकंलन पत्र–पत्रिका, समाचार पत्र, सरकारी अभिलेख, इन्टरनेट, आदि से किया गया है।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों को विश्व में सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया जाता है। किंतु मलिन (गन्दी) बस्तियां तथा उनके निवासियों में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति भारतीय संस्कृति पर एक आघात है। जहां अनेक सामाजिक–आर्थिक समस्याएं जन्म लेती है। जैसे–जैसे नगरीयकरण, औधोगिकीरण और आधुनिकीकरण का आगमन हुआ है वहाँ मलिन बस्तियों के क्षेत्रफल मे भी निरंतर वृद्वि होने लगती है। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, "भारतीय मलिन बस्तियों में 65,494,604 व्यक्ति रहते है जिनमें 33,968,203 पुरूष तथा 31526401 महिला है।"

मुंबई की धारावी ऐशिया की सबसे बड़ी मलिन बस्ती है। जो 2.4 कि०मी० में फैला हुआ है, यहां 850,000 आबादी निवास करती है। वहीं जनगणना 2011 के अनुसार उत्तरप्रदेश की मलिन बस्तियों में कुल 62,39,965 व्यक्ति निवास करते है जो राज्य की कुल जनसंख्या का 3.12 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा मलिन जनसंख्या मेरठ(544859), आगरा(533554), कानपुर(425008), लखनऊ(364941), गाजियाबाद(333962), वही हापुड़ में यह सख्या (92664) है। जहां रोजगार व शहरी आकर्षण के चलते व्यक्ति गांवों से शहरों की और पलायन करते आ रहे है। परन्तु निम्न आय व बढ़ती मुद्रा स्फीति के कारण इनकी आवासीय व्यवस्था निम्नस्तरीय हो जाती है। जहां व्यक्ति जीवन की विभिन्न मूलभूत सुविधाओं से वंचित होकर जीवनयापन को विवश हो जाते है।

वर्तमान में यह स्थिति है कि मलिन बस्तियां भारत के हर छोटे बड़े शहर में देखी जा सकती हैं।

अध्ययन क्षेत्र

हमारे लघु शोध का अध्ययन क्षेत्र भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का जनपद हापुड़ है जो भारत की राजधानी नई दिल्ली से लगभग 60 कि०मी० दूर ,एन०सी०आर० क्षेत्र में आता है। जिसे पहले हरिपुर के नाम से जाना जाता था। जिसका कुल क्षेत्रफल 660 वर्ग किमी० है।

शोध समीक्षा

मलिन बस्तियों के निवासियों में मादक पदार्थों के सेवन की प्रवृत्ति को लेकर पहले भी अनेकों शोध कार्य किए गये है जिनमें कुछ अग्रलिखित है।

- **लिसा सारंगी, हिमांशु पी आचार्य और पाणिग्रही** (सामुदायिक चिकित्सा विभाग, वी०एस०एस० मेडिकल कॉलेज, बुर्ला, उड़ीसा) ने संबलपुर की शहरी मलिन बस्तियों में किशोरों के बीच मादक द्रव्यों का सेवन पर शोध किया है तथा मादक पदार्थों की खपत के कारण, समस्या पर अंकुश लगाने के लिए एक व्यापक रणनीति की और इशारा किया है।
- **Pearl Arlappa, Shrawani Jha* and S. Jayaseeli (**St. Xavier's University, Action Area III, B, Newtown, Kolkata, West Bengal 700160, India) द्वारा "परिवार पर लत का प्रभाव, मलिन बस्तियों के सन्दर्भ में एक खोजपूर्ण अध्ययन" शोध पत्र में बताया कि मादक पदार्थों का सेवन कैंसर की तरह घातक है। लत में पड़ा व्यक्ति न केवल अपना जीवन बर्बाद करता है अपितु अपने परिवार व समाज को भी गर्त में ढकेल देता है।
- Arya Nair Kovilveettil Assam Medical Council, Assam, Jorhat, India द्वारा "असम की शहरी मलिन बस्तियों में युवाओं (10–24 वर्ष) के बीच मादक द्रव्यों के सेवन पर एक अध्ययन" 5 दिसंबर 2021 को प्रकाशित किया। जिसके द्वारा युवाओं का मादक पदार्थो के प्रति आकर्षण व उपभोग प्रवृत्ति की दर का अध्ययन 10–24 वर्ष के बीच के युवाओं पर किया।

मलिन बस्ती का अर्थ

जनाधिक्य एवं भीड़–भाड़ वाला वह क्षेत्र जहाँ सामान्य जनजीवन की कल्पना भी नही की जा सकती वहां तंग गलियां, गरीबी, अशिक्षा, पर्यावरण प्रदूषण, अंधविश्वास, अपराधियों का आश्रय स्थल तथा मादक पदार्थो का उपभोग अत्यधिक पाया जाता है।

मलिन बस्ती की परिभाषाएं

मलिन बस्तियों को परिभाषित करना आसान नही है क्योंकि मलिन बस्तियों की स्थिति वैश्विक व स्थानीय स्तर पर भिन्न–भिन्न पाई जाती है तथा जीवनयापन में भी बहुत अन्तर दिखाई पड़ता है। सरल शब्दों में वो स्थान जहां अत्यधिक जनसंख्या घनत्व के साथ स्वच्छता का अभाव हो मलिन बस्ती के अन्तर्गत है।

2001 की जनगणना के अनुसार

"एक छोटे घने क्षैत्र जिसकी जनसंख्या कम से कम 300 या 60–70 गरीब परिवार जो कि अस्वास्थ्यकर वातावरण में सामान्यतः अनुपयुक्त आधारभूत सुविधायें तथा पीने का पानी एवं सफाई सुविधाओं के अभाव में निवास करते है, को चिन्हित गन्दी बस्ती माना जायेगा।"

भारत सेवक समाज के अनुसार

"गन्दी बस्ती उस क्षेत्र को कहा जाता है जो अस्त–व्यस्त बसा हो, अव्यवस्थित रूप से विकसित हो तथा सामान्य रूप में वह क्षेत्र जनाधिक्य व भीड़भाड़युक्त हो, टूटे–फूटे मकान हो तथा उनकी मरम्मत के प्रति उपेक्षा बरती गई हो।"

मलिन बस्ती के प्रकार

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण (NSS) कार्यालय के अनुसार मलिन बस्तियों को तीन श्रेणियों में रखा गया है

1. **अधिसूचित मलिन बस्तियां (Notified slums)**
   ये मलिन बस्तियां नगर पालिका, नगर निगम, स्थानीय संस्थाएं या विकास प्राधिकरण द्वारा अधिसूचित क्षेत्र होते है।
2. **गैर–अधिसूचित मलिन बस्तियां (Non-notified slums)**
   खराब निर्मित चॉल के समूह के साथ घना उपनिवेश, जो अधिकतर अस्थाई प्रकृति का, भीड भरा, जहां कम से कम 20 परिवार रहते हो गैर–अधिसूचित मलिन बस्ती कहलाती है।
3. **पहचानयुक्त मलिन बस्ती (Identified slums)**
   60– 70 परिवारों वाला क्षेत्र जहां कम से कम 300 की आबादी ,पेयजल का अभाव, दूषित वातावरण तथा अमानवीय रहन–सहन आदि अव्यवस्था पायी जाती है।

मलिन बस्तियों का निर्माण क्षेत्र

4. नगरों व महानगरों के मध्य
2. औधोगिक क्षेत्रों के समीप
5. नगर की सीमा या नगर के बाहर
6. रेल्वे लाईनों के पास व पुलों के नीचे

मादक पदार्थों का अर्थ

साधारण शब्दों मे मादक पदार्थ वे पदार्थ है जिनके उपभोग द्वारा व्यवहार में असामान्य गतिविधि तथा उत्तेजना की धारणा का उदय होता है। साथ ही यहां बार बार उपभोग करने की प्रबल ईच्छा पायी जाती है जैसे – अफीम, शराब, भांग आदि।

परिकल्पनाऐ

- मलिन बस्तियों के निवासियों में मादक पदार्थो की उपभोग प्रवृत्ति अधिक होती है।
- मलिन बस्तियों के निवासी मादक पदार्थों के सेवन के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित है।

परिकल्पना 1. मलिन बस्तियों के निवासियों में मादक पदार्थो की उपभोग प्रवृत्ति अधिक होती है।

हमने इस लघु शोध में हापुड़ की 5 मलिन बस्तियों में से कुल 100 व्यक्तियों (पुरूषों), जो किसी न किसी प्रकार के मादक पदार्थों का सेवन करते है, को साक्षात्कार के लिए चुना है। उपरोक्त परिकल्पनाओं के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त अनुसूची में हमने मलिन बस्तियों के निवासियों के रोजगार,

आय, मनोरंजन के साधन, पारिवारिक स्थिति, विभिन्न मादक पदार्थो (शराब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा आदि) के प्रयोग, आदि से संबंधित प्रश्नों को शामिल किया है।

मादक पदार्थो का सेवन संबंधी तालिका (N=100)

क्र० सं०	मादक पदार्थ	व्यक्ति हाँ	व्यक्ति नहीं	हाँ प्रतिशत	नही प्रतिशत
1	शराब	61	39	61%	39%
2	बीड़ी, सिगरेट	60	40	60%	40%
3	तम्बाकू	64	36	64%	36%
4	हुक्का	15	85	15%	85%
5	भांग	44	56	44%	56%
6	गुटखा	66	34	66%	34%
7	सूलोचन	05	95	05%	95%
8	अफीम	02	98	02%	98%

श्रोत– अनुसूची के आधार पर साक्षात्कार द्वारा

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि मलिन बस्तियों के अधिकांश निवासियों में मादक पदार्थो जैसे शराब, सिगरेट, तम्बाकू, भांग आदि के उपभोग की प्रवृत्ति पायी जाती है। जिसका मुख्य कारण गरीबी, बेरोजगारी, पारिवारिक कलह, मनोरंजन के साधनों का अभाव तथा मादक पदार्थों के शरीर पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों के प्रति अज्ञानता आदि है।

परिकल्पना 2. मलिन बस्तियों के निवासी मादक पदार्थों के सेवन के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित है।

इस लघु शोध द्वारा हमने चयनित 5 मलिन बस्तियों में मादक पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्तियों के शारीरिक व मानसिक विकारों का परीक्षण निम्न तालिका द्वारा किया है।

शारीरिक व मानसिक विकार संबंधी तालिका (N=100)

क्र० सं०	शारीरिक विकार	व्यक्ति हाँ	व्यक्ति नहीं	हाँ प्रतिशत	नही प्रतिशत	मानसिक विकार	व्यक्ति हाँ	व्यक्ति नहीं	हाँ प्रतिशत	नही प्रतिशत
1	यकृत रोग Liver disease	75	25	75%	25%	चिड़चिडापन Irritability	78	22	78%	22%
2	अस्थमा Asthma	35	65	35%	65%	क्रोध Anger	71	29	71%	29%
3	किडनी रोग Kidney disease	51	49	51%	49%	क्षीण स्मरण-शक्ति Loss of memory	56	44	56%	44%
4	रक्तचाप Blood pressure	65	35	65%	35%	थकावट Fatigue	65	35	65%	35%
5	हृदय रोग Heart disease	38	62	38%	62%	अवसाद Depression	02	98	02%	98%

6	खून के थक्के बनना Blood clot formation	5	95	5%	95%	दिमागी दौरा seizure Disorder	10	90	10%	90%
7	कैंसर Cancer	10	90	10%	90%	सर दर्द Headache	62	38	62%	38%
8	यौन समस्या Sexual problem	*	*	---	---					

श्रोत– अनुसूची के आधार पर साक्षात्कार द्वारा

*उत्तरदाताओं ने यौन समस्या से संबंधित प्रश्नों का उत्तर देने से इंकार कर दिया।

उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट है कि मादक पदार्थों के निरंतर सेवन से ये विभिन्न शारीरिक व मानसिक बिमारियों से ग्रसित है। प्रत्यक्ष संवाद द्वारा मिली जानकारी के अनुसार मलिन बस्ती के अधिकांश निवासी एक से ज्यादा शारीरिक व मानसिक विकारों से पीड़ित है। नशा सामग्री समय पर उपलब्ध न होने की स्थिति में इनमें चिड़चिड़ापन, क्रोध, सर दर्द, तथा अवसाद आदि की स्थिति पायी जाती है। गरीबी के कारण इन्हे समुचित उपचार भी नही मिल पाता जिसके कारण इनकी शारीरिक–मानसिक स्थिति और गम्भीर हो जाती है।

मलिन बस्तियों के समक्ष मुख्य चुनौतियां

- मलिन बस्तियों की मुख्य चुनौती इनका बढ़ता आकार और घनत्व है
- अनियोजित व बेढ़ंगे तरीके से निर्माण होने के कारण यहां जल निकासी, उचित प्रकाश, स्वच्छ वातावरण, आदि सुविधाओं का अभाव पाया जाता है।
- अशिक्षित होने के कारण, मलिन बस्ती के अधिकतर निवासी कठिन श्रम के कार्यों में संलग्न होते है। फलतः इनमें मादक पदार्थों के उपभोग का स्तर अधिक होता है।
- मलिन बस्तियों के निवासियों में मादक पदार्थों के उपभोग की प्रवृत्ति के कारण शारीरिक व मानसिक समस्याएं पायी जाती है।

सुक्षाव

- मलिन बस्तियों के दुष्प्रभाव वर्तमान परिदृश्य में स्पष्ट है।अतः भविष्य में नगरों व औधोगिकीरण केन्द्रों का विकास उचित व व्यवस्थित रूप से होना चाहिए।
- मलिन बस्तियों के उन्मूलन के लिए नगरीय आवास कार्यक्रम, उत्तर प्रदेश स्व-स्थानें मलिन बस्ती पुनर्विकास नीति, प्रधानमंत्री आवास योजना आदि कार्यक्रमों में तीव्रता लाई जाए ताकि मलिन बस्ती निवासियों को इन योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ सरलता से मिल सके।
- मलिन बस्तियों में निवासित नागरिकों की समीक्षा समय–समय पर करना अति आवश्यक है। अगर प्रवर्जन की प्रक्रिया द्वारा शहरी आबादी में वृद्वि होती है तो यह वृद्वि ग्रामीण

0%	90%
2%	38%

रोजगार के पतन का सूचक है। अतः सरकार व प्रशासन को ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन के प्रयासों में तीव्र वृद्वि अति आवश्यक है।

- शोध के दौरान पाया गया है कि प्रत्येक मलिन बस्ती के निकट एक या एक से अधिक शराब की दुकाने है। जिससे मादक पदार्थों की उपलब्धता इनके लिए आसान हो जाती है ओर जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव इनके आर्थिक, सामाजिक व शारीरिक परिवेश पर पड़ता है। अतः प्रशासन व सरकार द्वारा इन मादक पदार्थों की दुकानों को इनके आवासीय स्थानों से कही दूर भेजना उचित होगा।
- राष्ट्रहित में, जनसंख्या नियंत्रण कानून लाया जाए ताकि मलिन बस्तियों का बढ़ता आकार नियन्त्रण में किया जा सके।
- मलिन बस्तियों में श्रम शक्ति की प्रचूरता पायी जाती है। अतः सरकार व प्रशासन को, इस श्रम शक्ति का सही दिशा में लगाना अति आवश्यक है ताकि असामाजिक कृत्यों को पनपने से पहले ही रोका जा सके।
- सरकार व प्रशासन को मलिन बस्तियों में नशा मुक्ति अभियान कार्यक्रमों का समय–समय पर आयोजन करते रहना चाहिये।

निष्कर्ष

इस लघु शोध "जनपद हापुड़ की मलिन बस्तियों के निवासियों में मादक पदार्थों के सेवन की प्रवृत्ति : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" का गहन विश्लेषण करने के पश्चात हमें यह ज्ञात हुआ है कि चयनित मलिन बस्तियों के अधिकांश निवासी मादक पदार्थों जैसे शराब, बीडी, सिगरेट, तम्बाकू, गुटखा, भांग आदि किसी न किसी प्रकार का नशा करते है तथा कुछ मलिन बस्ती निवासियों में तो एक से अधिक मादक पदार्थों के सेवन, की प्रवृत्ति पायी गयी है। जिसके चलते यहां के निवासी अनेक शारीरिक व मानसिक विकार जैसे लीवर, रक्तचाप, किड़नी, क्रोध, चिडचिडापन, थकावट आदि से ग्रस्त है।

शोध से ज्ञात हुआ है कि अध्ययन क्षेत्र में सरकारी नशा मुक्ति केन्द्र आदि संसाधनों का अभाव है जिससे मादक पदार्थों में लिप्त व्यक्तियों का उचित उपचार नही हो पा रहा है। हापुड़ जिले में एक एन०जी०ओ० द्वारा संचालित "लाइफ केयर नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केन्द्र हापुड़" इस दिशा में प्रयासरत है लेकिन वहाँ संसाधनों की सीमितता के कारण एक समय में मात्र 10 व्यक्तियों का उपचार संभव है। केन्द्र के संचालक डॉ० जमीर हसन ने साक्षात्कार द्वारा बताया कि हमारे यहा स्मैक, गांजा, चरस, अफीम, व इंजैक्शन आदि नशे की लत को छुडाने में सफलता 90 प्रतिशत तक है जबकि शराब छुडाने में सफलता मात्र 5 प्रतिशत की है क्योकि यहां से उपचार के बाद व्यक्ति पुनः शराब का सेवन करने लगते है।

अध्ययन द्वारा स्पष्ट है कि मलिन बस्ती के निवासी किस स्तर तक मादक पदार्थों के उपभोग में लिप्त है जिसके चलते इनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति दयनीय होती जा रही है। अतः सरकार व प्रशासन को नशा मुक्ति अभियान, मादक पदार्थों के प्रति जन जागरूकता, नशा मुक्ति शिविर, अवैध मादक पदार्थों की बिक्री पर रोक, आदि के प्रति सार्थक कदम उठाने होंगे।

सन्दर्भ

1. *Current Research Journal of Social Sciences.*
2. Impact of Addiction on Family: An Exploratory Study with Reference to Slums in Kolkata.
3. Does substance use by family members and community affect the substance use among adolescent boys? Evidence from UDAYA study, India.
4. A study on substance abuse among young people (10-24 years) in urban slums of Jorhat, Assam Arya Nair Kovilveettil.
5. Assam Medical Council, Assam, Jorhat, India.
6. www.researchgate.net/.
7. https://www.drishtiias.com/daily-news-analysis/rapid-urbanisation-and-plight-of-slums.
8. https://ijassonline.in/HTMLPaper.aspx?Journal=International%20Journal%20of%20Advances%20in%20Social%20Sciences;PID=2020-8-3-1.